हरियाणवी लोकसाहित्य में मनोविनोद

डॉ0 आर0 के0 मेहरा, डी0 लिट0
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी–विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अम्बाला छावनी।

हरियाणवी लोक–जीवन परिश्रम और मंनोरंजन के ताने बाने से बुना हुआ है। कहीं–कही तो परिश्रम और मंनोरंजन इतना घुला–मिला है कि उनको अलग करना कठिन है। गॉव के स्त्री, पुरुष और बच्चे सभी हॅस–खेलकर अपना जीवन बिताते हैं। विशेषकर हरियाणा की ग्रामीण नारी का जीवन श्रम–कुशल है। भले ही मशीनों से घर के कार्य आसान हो गए है, फिर भी वह घर का सारा कार्य स्वयं करती है। गाय–भैंस का काम, बच्चों का लालन–पालन तथा खेतों का कार्य भी करती है। जीवन में अत्यधिक व्यस्तता होने के बावजूद उसे जो भी थोड़ा–सा समय मिलता है तभी वह विनोदपूर्ण वार्तालाप करती है या गीत गुनगुनाने लगती है। यहॉ की नारियों की मनोरंजक वार्ता अनेक गीतों की रचना की प्रेरक बनी है। प्रत्येक अवसर पर यहॉ की स्त्रियां मनोरंजन करती हैं। विवाह के अवसर पर जो परिहास का उल्लेख मिलता है वह बहुत ही मधुर होता है। कहीं–कहीं पर इन गीतों का व्यंग्य इतना तीक्ष्ण और अनूठा होता है कि नारियों की सूझ–बूझ पर आश्चर्य चकित होना पड़ता है।

हरियाणवी समाज में नारियां विवाहोत्सव पर 'बढार' तथा 'पहराणवी' के अवसर पर 'सीठणे' देती हैं। 'सीठणा' एक प्रकार की मधुर, उपालम्भपूर्ण, संगीतमय गाली होती है। नारियां विवाह के अवसर पर बारातियों और समधी को सीठणें देती हैं। इनका बुरा भी नहीं माना जाता बल्कि वातावरण रंगीन हो जाता है। निम्न गीत में बारातियों को सीठणा दिया गया है–

हमने बुलाए सुथरे–सुथरे, भूंडे–भूंडे आये री पहसेरे।
हमने बुलाए लाम्बे–लाम्बे, छोटे–छोटे आये री पहसेरे।
हमने बुलाए तकड़े–तकड़े मरयल–मरयल आये री पहसेरे।
हमने बुलाए गोरे–गोरे, काले–काले आये री पहसेरे।
हमने बुलाए आंख्या आले, कांणे–अंधे री पहसेरें।
हमने बुलाए हाथी–घोड़े, गधों पै चढ़ के आये री पहसेरे।
छाज का है चंवर दुलाया, झाडू का है सेहरा री पहसेरे।

इस लोकगीत में बन्नी पक्ष की नारियां एक–एक बाराती पर चुन–चुन कर चुटकी लेती हैं। उनकी शक्ल–सूरतों पर अच्छी खासी छींटा–कशी होती है। फेरों के समय भी बन्नी पक्ष की ओर से गाया जाने वाला गीत देखिए–

हौले–हौले चाल महारी लाडो हांसैगी सुहेलड़ियां।
मोठ–सा मृत पाड़ै म्हारी लाडो रात घणेड़िया।
हौले–हौले ....।

इस गीत में ग्रामीण जीवन खुलकर सामने आते हैं। यहाँ भी 'मोठ पाड़ने' की बात रोचक है। मोठ, मूंग, ग्वार, ज्वार, बाजरा आदि की फसल हरियाणा में विशेष होती है। अन्य फसलों को आराम से काटा जा सकता है किन्तु 'मोठ' की फसल काटने में बड़ी जल्दी की जाती है। अतः लड़की से मजाक किए जा रहे कि फेरे धीरे–धीरे लेना मोठ से मत पाड़ना अर्थात् शीघ्रता मत करना। आज की महत्त्वपूर्ण रात जितनी लम्बी हो उतना ही अच्छा है।

अब लड़की थोड़ा घबराती भी है तो उसको पूर्ण सांत्वना दी जाती है और कहा जाता है कि वह क्यों घबराये? उसका सारा परिवार तो है और अगर डर की कोई बात भी है तो बन्ना डरेगा क्योंकि वह लगभग बन्नी की तुलना में अकेला है। बन्नी को सांत्वना देने के लिए इस अवसर पर कुछ कठोर वचन भी बोल दिए जाते हैं। क्योंकि विवाह में सब उचित है। गाली भी मिट्ठी लगती है। बन्नीं पक्ष की ओर से फेरा गीत गाया जाता है।

पहला फेरा ले म्हारी लाडो, दादे की पोतड़ियां।
दूजा फेरा ले म्हारी लाडो, ताऊ की बेटड़ियां।
तीजा फेरा ले म्हारी लाडो, बाबल की धीयड़ियां।
चौथा फेरा ले म्हारी लाडो, मामै की भानजड़ियां।

इसी प्रकार, पांचवे फेरे में भाई नाम ले देती है तथा छठे फेरे में फूफे का नाम लेती हैं किन्तु अंतिम तथा सातवें फेरे में कहती हैं –

सातवां फेरा ले म्हारी लाडो, हुई परायेड़ियां।

अर्थात् सांतवे फेरे के साथ ही लाडो पराई हो गई, बन्ने की हो गई। फेरों के बाद वर–वधू की एक कमरे में पूजा होती है 'थापे आगे' ले आया जाता है। वहाॅ पर नारियों के बीच वर और वर का बहनोई दो ही पुरुष होते हैं। वर से 'छन्न' करने का आग्रह किया जाता है।उस समय हास्यपूर्ण वातावरण होता है। यह अवसर पर वर की बौद्धिक सूझ–बूझ की परीक्षा का होता है। इन छन्नों का वर्ण्य–विषय प्रधानतया सास, सलहज, साली पर कही जाने वाली बातें तथा व्यंग्योक्तियां होती हैं। इस अवसर पर बुरा भी नहीं माना जाता। वहाॅ पर उपस्थित स्त्रियां अपनी मर्यादानुसार वर से मजाक करने से नहीं चुकती। वर भी मजाक करने के मौके का पूरा फायदा उठाते हुए कहता है–

रिमझिम रिमझिम मेहा बरसे, बरसे बदली काली।
सासू जी प्यारी लागै, हमको छोटी साली।

इस समय वर पक्ष की ओर से बहनोई या वर का जो भी दोस्त वर के साथ होता है वो भी मजाक करने में पीछे नहीं रहते। वर द्वारा कहा गया एक अन्य छन्न देखिए–

सड़क पै सकड़, सड़क पै इक्का, एक तो ब्याह चले, दूसरी का दे दो टीका।
छन पर छन, छन पर आरसी। थारी बेटी राज करैगी, हम पढांगे फारसी।

फेरों के बाद 'कॅवरकलेवा' होता है। इसमें वर के साथ उसका बहनोई, मित्र–प्यारे, भाई–भतीजे 'कलेवा' करते हैं। वर को खाना आरम्भ करने से पहले नेग दिया जाता है। इस अवसर पर नारियों के कण्ठों से लोकगीत ध्वनित होने लगते हैं। इस अवसर पर अधिकतर गीत मजाक और मनोविनोद के लिए गाए जाते हैं। अपने नणदोई से मजाक करती हुई हरियाणवी नारी कहती हैं–

ओ जी नणदोई, थारी ऑख नींबू केरी फॉक
नींबू हो तो चुसल्यू नणदोई जी
तारी ऑख न चुस्सी जाए।

हरियाणवी समाज में जीजा–साली का संबंध मधुर तथा महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यहाॅ तक कि उसे 'साली आधी घरवाली' माना जाता है। जीजा–साली का संबंध अत्यन्त नाजुक, मजाकिया तथा स्नेहपूर्ण होता है। जीजा–साली के मजाक नेग–सम्मन माने जाते हैं। लोकगीतों में जीजा–साली के स्नेह की उपमा बहुत ही उपयुक्त दी गई है–

ये दूध मलाई का प्यार सै, जीजा–साली का प्यार सै।

एक अन्य गीत में साली–जीजा से ताश खेलने का शरारत भरा अनुरोध करती है–

तास लिए पास खड़ी खेलों मेरे जीजा जी
इक्की ले लो, दुग्गी ले नों, तीग्गी ले लों प्यारे जीजा जी।

हरियाणवी समाज में समधिन को भी 'सीठणे' देने की प्रथा प्रचलित है। इसे बुरा भी नहीं माना जाता। एक गीत में कहा गया है–

चकले में राछ घला दो जी चकले में
(समधी का नाम) की जोरू को पीसने बैठा दो जी
जो तू पीसगी मोटा लगाऊंगी सोटा
ऊपर तै पाडूंगी चौटा, चकले .....में राछ घला दो जी।

विवाह–संस्कार में 'रतजगे' में नारियों को गाने के लिए अधिक समय और खुलापन मिल जाता है। 'रतजगे' के गीतों में बन्दड़ी, घोड़ी, जकड़ी आदि गीतों को गाया जाता है। इन गीतों में मनोरंजन और विनोद तथा प्रेम भरी चुटकियों की प्रधानता होती है। ऐसा लगता है कि भाव उर्मिया बांध तोड़ कर पूर्ण वेग से प्रवाहित होना चाहता है।

बारात जाने के बाद वर–पक्ष में कई आचार होते है। इनमें प्रमुख 'खौड़िया' है। इस आचार में स्त्रियां कृत्रिम विवाह रचाती है। विवाह के समस्त कार्यों की आवृति होती है। बारात जाने के बाद उसी दिन–रात्रि में सब पड़ौस की स्त्रियां

मिलकर इस प्रथा को मनाती हैं। डॉ0 शकर लाल यादव ने इस प्रथा मनाने के तीन लाभ बताए है।– मनोरंजन होता है, जागरण होने के कारण घर की रखवाली हो जाती है और विवाह संबंधी शिक्षा मिल जाती है। उस दिन रात्रि में नारी–जगत स्वतन्त्र होता है और वे अपने भावों को गीतों में और मुद्राओं को नृत्यों में प्रकट करती हैं। अश्लील गानों का भी प्रयोग किया जाता है। लेकिन लोक साहित्य के मनीषी डॉ0 भीम सिंह मलिक जी का यहॉ अश्लीलता के बारे में कहना है कि–अवसरोचित खुलापन अश्लीलता नहीं होती। श्रोता मण्डली और वक्ता का संवाद जो दोनों के लिए रंजक एवं वांछनीय है, वह अश्लील कैसे हुआ ? निःसंकोचशीलता अथवा वर्जना–मुक्ति को हमें अश्लीलता नहीं कहना चाहिए। बल्कि यह तो सैक्स एज्यूकेशन अथवा यौन–रहस्य का प्रकाशन है।

वधू आगमन के समय 'खेड़िये' की नींद अर्थात रतजगे से अलसाई आँखे दुलहन के आते ही चमक उठती है और गीतों की बहार फिर आज जाती है। सास अपनी सभी घर–मोहल्ले की स्त्रियों समेत 'बहू' की अगवानी पर खड़ी मिलती है। कच्चे सूत की आंटी बहू के सिर पर रखकर, उस पै पानी का लोटा रखती है और मुँह दिखाई लेकर बहू सासू आदि के पीछे–पीछे चल देती है। स्त्रियां ये गीत उसकी अगवानी में गाती हैः–

आइये बहुअड़ इस घरां तेरी सासड़ आई सुसरै घरां
आइये बहुअड़ इस घरां तेरी जेठानी आई जेठ घरां

गौणे के बाद जब बटेऊ के साथ लड़की ससुराल में रहने के लिए चलती है तो स्त्रियां इस अवसर पर अक्सर यह गीत गाकर जाता है।

म्हारै घर मैं आ रह्या री बटेऊ, साथण का लणिहार,
साथण चाल पड़ी मेरे डब–डब भर आये नैण।
अपणी साथण नै घाघरा सिमा द्यूं नाड़ा झुब्बेदार......।
साथण चाल पड़ी मेरे डब–डब भर आये नैण।
अपणी साथण नै मैं सासरै खंदा द्यूं गैल बटेऊ जा.....।
साथण चाल पड़ी मेरे डब–डब भर आये नैण।
अपणी साथण नै मैं चूंदड़ी रंगा द्यूं, घोटा ला दूयं लार ।
साथण चाल पड़ी मेरे डब–डब भर आये नैण ।
अपणी साथण नै मैं भेजूं माया–जाया बीर तावली मंगा ल्यू।
साथण चाल पड़ी मेरे डब–डब भर आये नैन।

इस प्रकार 'गौणे' के अवसर पर लड़की को पूरी गृहस्थ जीवन की शिक्षा, लोकाचार आदि से प्रवीण करके भेजती हैं। आज तक जो सखी–सहेली गुड्डियों के खेल खेलती थी, वे एक–एक करके जीवन में प्रवेश कर रही है। गुड्डियों के खेल में भी गृहस्थी की शिक्षा ही है। गुड्डी –गुड्डे का विवाह आज हकीकत बन गया। अब वह गुड़िया ससुराल जा रही है। खेल–खेल में जो सीखा था अब वह जीवन में करना है। उसी शिक्षा की पुनरावृत्ति लड़कियां निम्नलिखित गीत के माध्यम से करके जाने वाली की यादें ताजा कर रही हैं–

जीजी रलमिल गुड़ियां खेलती, तूं चाली जीजा के साथ बाहण चाली सासरै।
जीजी सुसरै का कहण पुगाइये, सुसरा धरम का बाप बाहण चाली सासरै।
जीजी सासू का कहण पुगाइये, सासू धरम की मां बाहण चाली सासरै।
जीजी जीजा का कहा मत गेरिये, कैरे तेरे दिन रात, बाहण चाली सासरै।
देवर संग का सुहेलड़ा जैसे धरम का बीर बाहण चाली सासरै।

इस प्रकार समस्त गीत में अन्य जेठ, जेठानी आदि के नाम देकर शिक्षा देती हुई लड़की को विदाई कर देती है।

फागण (फाल्गुण) के गीत होली–पर्व के आगमन की सूचना देते हैं। यदि सावन के गीत ग्रीष्मकालीन जड़ता को भगाते हैं तो फागण के गीत शरदऋतु की ठिठुरन को दूर करते हैं। फागण में होली–फाग का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। सभी एक–दूसरे को गुलाल लगाते हैं और रंग–बिरंगे बनकर, नाच–कूदकर, कोड़ों के साथ इस पर्व का आनंद लेते हैं। बसन्त में तो कोयल भी पंचम स्वर में गाती है तो मानव समाज षष्ठम् एवं सप्तम सुर से नीचे क्यों रहता!

फागण को 'मस्ताणा फागण' की संज्ञा से विभूषित किया जाता है। नवयौवनाओं की तो बात ही क्या, फागण का जादू वृद्धाओं तक को रसीली चटको–मटको बना देता है। निम्न गीत के बोल देखिए–

काची अम्बली गदराई सामण मैं,
बुड्डी री लुगाई मस्ताई फागण मैं।

वृद्धाओं के पाँव नव–नवेली छममक–छल्लो की तरह थिरकने लगते हैं, देह मरोड़े मारने लगती है और हृदय के बोल इन स्वरों में फूट पड़ते हैं–

छोरे मारूँगी मरोड़ा, देही तोड़ गेरूँगी रे।
ज्यब आज्यागा तेरा ताऊ हाँडी रोड़ गेरुँगू रे।
इसी गजब की बहू बणूँगी ज्यब सोल्हा सिंगार करूँ।
गाबरुआँ मैं रुक्का पड़ज्या बुढ़याँ तक भी मार करूँ।

गाँवों में मुख्यतः औरतें आज भी पानी घड़ों से लाती है। नई–नवेली 'बहुटियां' पानी के लिए 'पीतल की टोकणी' का प्रयोग करती हैं। लड़की अपने पानी भरने की 'टोकणी' अक्सर पीहर से ही लाती है। पानी भरना भी हरियाणवी युवती के लिए बड़ा गर्व का विषय है क्योंकि इस अवसर पर वह पूरा श्रृंगार करके लरजती चलती है, तो उसके चाहने वाले एकटक देखते रहते हैं। निम्न गीत में 'पनघट' की साज–सज्जा तथा नायिका के प्रति 'सास' 'ननद' का गुस्सा उल्लेखनीय है–

टोकणी पीतल की रै जगाधरी तै मोल मंगाई ,
ईढ़वा जाली का मन्नै उसपै दोघढ़ जचाई।
छैल तरवाइयो हो तेरी हूर लरज दी आई,
घर नै मत आइये तेरा आरा सुबे सिंघ भाई।
इतनी सी सुन कै हो सासड़ नै नणद दौड़ाई,
पाणी के म्हारे रिते पड़े तेरा मरियो सुबे सिंघ भाई।
नणद गाली मत दे सुबे सिंघ की के लगै सै लुगाई।

हरियाणवी गीतों में हास्य–व्यंग्य का भी चित्रण मिलता है। निम्न गीत में पत्नी अपने पति से कपड़े और गहनों की मांग करती हुई कहती है–

मेरा दामण सिमादे हो–हो नणदी के बीरा।
तन्नै न्यूं ढूंगै पै राखू हो–हो नणदी के बीरा।
मेरी कुड़ती मंगादे हो–हो नणदी के बीरा।
तन्नै न्यू छाती पै राखू हो–हो......
मेरी चूड़ियां मंगादे हो–हो ....।
तन्नै न्यूं हाथां पै राखुं हो–हो .... ।
मेरा बोरला घड़ादे हो–हो...... ।
तन्नै न्यूं माथे पै राखूं हो–हो.....
मेरी जूती मंगादे हो–हो........
तन्नै न्यूं ठोकर पै राखूं हो–हो नणदी के बीरा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हरियाणा में स्त्रियां प्रत्येक अवसर पर मनोरंजन करती हैं। जीवन में अत्यधिक व्यस्तता होने के बावजूद उसे जो भी थोड़ा–सा समय मिलता है, तभी वह विनोदपूर्ण वार्तालाप करती है या गीत गुनगुनाने लगती है। अतः यहॉ की नारियों की मनोरंजक वार्ता अनेक लोक गीतों की रचना की प्रेरक बनी हैं।

संदर्भ सूची–

1. डॉ0 शंकर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य।
2. डॉ0 भीम सिंह मलिक, हरियाणा के लोक गीत।
3. रघुवीर सिंह मथाना व डॉ0 बाबू राम, हरियाणवी साहित्य का इतिहास।
4. डॉ0 गुणपाल सांगवान, हरियाणा के लोक गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन।
5. डॉ0 रमेश मेहरा, हरियाणवी लोकसाहित्य।
6. डॉ0 देवीशंकर द्विवेदी, संपादक, संभावना